Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 2195–2198

COORDINATION OF FOLK PRINCIPLES AT THE CORE OF MAGAHI FOLK SONGS

मगही लोकगीतों के मूल में लोकतत्त्व का समन्वय

Ramniwas Sharma [1], Rashmi Ojha [1]

[1] NCWEB, Aryabhatta College, University of Delhi

ABSTRACT

English: Sociology and its cultural outlines have always been described in Indian folk songs. We all know that folk literature has predominance in folk literature and hence folk literature is considered a little different from polite literature. Folk essence is found described through common life in forms like folk attitude, folk mentality, folk culture, folk expression. Similarly, the five elements are described in all the folk songs. Such suppressed desires and wishes present in a person's life lie buried somewhere or appear from time to time in the form of omens, sub-omens or dreams of a person engaged in deep sleep. Some scholars of folk literature also believe that the suppressed desires or wishes may not be of the present life but may also be genetic. All the above mentioned characteristics are present in some form or the other in the present folk life. This is also believed to be the reason that The presence of public opinion remains in the human mind. Public tendencies always have a place in the original state of public opinion.

Hindi: भारतीय लोकगीतों में समाज शास्त्र एवं उसकी सांस्कृतिक रूपरेखाओं का वर्णन हमेशा से होता आ रहा है। हम सभी जनते हैं कि लोक सहित्य के अन्तर्गत लोकतत्त्व की प्रधानता रहती है और इसलिए लोक साहित्य शिष्ट साहित्य से थोड़ा भिन्न माना जाता है। लोकतत्व सामान्य जीवन के माध्यम से लोकप्रवृति, लोकमानस, लोकसंस्कृति, लोकअभिव्यक्ति जैसे रूपों में वर्णित पाया जाता है। इसी तरह से पाँचों उपादान समस्त लोकगीतों में विर्णत रहता है। व्यक्ति के जीवन में उपस्थित ऐसी दबी हुई वसनाएँ एवं मनोकांक्षाएँ जो कहीं दबी पड़ी रहती है अथवा समय-समय पर शगुन उपशगुन या घोरनिद्रा में लिप्त व्यक्ति के स्वप्न के रूप में दर्शन देती है। कुछ लोकसाहित्य के विद्वानों की मान्यता यह भी है कि दबी हुई मनोकांक्षाएँ या वासनाएँ वर्तमान जीवन की न होकर अनुवांशिक भी हो सकती है। उपर्युक्त समस्त विशेषताएँ वर्तमान के लोकजीवन में किसी न किसी रूप में उपस्थित है। इसका यह भी कारण मान जात रहा है कि मानव मस्तिष्क में लोकमानस की उपस्थिति बनी रहती है। लोकमानस के मूल अवस्था में लोकप्रवृतियों का स्थान सदैव बना रहता है।

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.3383

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

भारतीय लोकगीतों में समाज शास्त्र एवं उसकी सांस्कृतिक रूपरेखाओं का वर्णन हमेशा से होता आ रहा है। हम सभी जनते हैं कि लोक सहित्य के अन्तर्गत लोकतत्त्व की प्रधानता रहती है और इसलिए लोक साहित्य शिष्ट साहित्य से थोड़ा भिन्न माना जाता है। लोकतत्व सामान्य जीवन के माध्यम से लोकप्रवृति, लोकमानस, लोकसंस्कृति, लोकअभिव्यक्ति जैसे रूपों में वर्णित पाया जाता है। इसी तरह से पाँचों उपादान समस्त लोकगीतों में विर्णत रहता है। व्यक्ति के जीवन में उपस्थित ऐसी दबी हुई वसनाएँ एवं मनोकांक्षाएँ जो कहीं दबी पड़ी रहती है अथवा समय-समय पर शगुन उपशगुन या घोरनिद्रा में लिप्त व्यक्ति के स्वप्न के रूप में दर्शन देती है। कुछ लोकसाहित्य के विद्वानों की मान्यता यह भी है कि दबी हुई मनोकांक्षाएँ या वासनाएँ वर्तमान जीवन की न होकर अनुवांशिक भी हो सकती है। उपर्युक्त समस्त विशेषताएँ वर्तमान के लोकजीवन में किसी न किसी रूप में उपस्थित है।

इसका यह भी कारण मान जात रहा है कि मानव मस्तिष्क में लोकमानस की उपस्थिति बनी रहती है। लोकमानस के मूल अवस्था में लोकप्रवृतियों का स्थान सदैव बना रहता है। इसलिए लोकवार्ता विद्वानों का यही मानना है कि आज के इस अतियर्थातवादी और तार्किक युग में भी लोकगीत जीवित है। इसकी मनोरंजनात्मकता और अनुष्ठानिक अभिव्यक्ति मिलती रहती है। लोकमानस के खाली क्षणों में मनोरंजन के विविध अनुष्ठान जैसे- लोकवार्ता या लोकगीत के माध्यम से सम्पन्न होते हैं।

मगधप्रांत के लोकजीवन में विविध अनुष्ठानों को विधिवत सम्पन्न कराने के लिए अनेकानेक लोकगीतों का स्मरण एवं गायन किया जाता है। जिसमें लोकमानस के प्रवृत्तियों का वर्णन सुस्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। इन लोकगीतों में मनोरंजन के अन्तर्गत सौखिया मनोरंजन एवं व्यवसायिक मनोरजन का समावेश रहता है।

विविध अनुष्ठानों के अन्तर्गत देवी-देवता का पूजन, विविध संस्कार, इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के निवारण के समय विविध प्रकार के लोकगीत गाये जाते हैं। इसमें मूलतः लोक प्रवृत्तियाँ ही अभिव्यक्त होती है। जिस प्रकार देश काल और परिस्थितियों में बदलाव होता रहता है, ठीक उसी प्रकार पुराने गीतों के स्थान पर नये गीतों का जन्म होते रहता है।

भारतवर्ष की संस्कृति के मूल में धर्म और धर्म के मूल में साधना और साधना के मूल में विविध अनुष्ठान है। इन विविध अनुष्ठानों को सम्पन्न कराने में लोकगीत एक अहम भूमिका के रूप में स्थान रखता है, जिसमें स्त्रियाँ नाना प्रकार के गीतों का गायन करती हैं। मगध प्रांत में विविध अनुष्ठनों के गीतों का गायन करती हैं। मगध प्रांत में विविध अनुष्ठानों को मनाया जाता है जिसमें सूर्य की उपासना का बड़ा ही पवित्र एवं धार्मिक स्थाना माना गया है। इस अनुष्ठान में लोकगीतों का महत्व उतना ही है जितना भारतवर्ष में गंगा नदी का महत्व है। अतः इस अनुष्ठान को सम्पन्न करने के लिए लोकगीतों की महत्ता अनिवार्य मानी जाती है। इस अनुष्ठान में गाये जाने वाले लोकगीतों का महत्व इतना अत्यधिक है कि इन लोकगीतों का सूर, लय और ताल की एक अलग पहचान है जिसे हम सुनकर ही अनुमान लगा सकते हैं कि यह गीत छठी मईया का गीत है, जिनको सूर्य षष्ठी भी कहा जाता है। इसकी ध्वनि और लय एक विशेष प्रकार की भूमिका का सृजन करती है जिसमें पवित्रता और मनोकांक्षा का अपूर्व संगम देखने को मिलता है। छठ के पवित्र एवं पारम्परिक गीतों के सुर, ताल और लय के समकक्ष उनकी धुनों पर ही अनेकानेक लोकगीतों का सृजन होने लगा। क्षेत्रीय चुनाव, सिनेमा आदि में आधुनिक भाव बोध की गीतों सूर्योपासना के गीतों के लय और ताल पर अनेक गीतों का सृजन होने लगा। मगध प्रांत में गीतों का अनुवाद इस लोकगीत के धुन पर राम प्रसाद 'पुण्डीक' ने किया है। यहाँ गाये जाने वाले गीतों में देवी-देवता और उसमें लोकप्रवृतियों का समावेश प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

''अउँटल दुधवा के दिनानाथ गेलवऽ सेराय,
कहवाँ गँववल ऽ ये दिनानाथ ये हो सारी रात?
आवइत में हलिअई ये चाची नदिया किछार,
निर्धन सेवकिया ये चाची बटिया लेले रोक,
धनवा दीअइते ये चाची बीतले सारी रात।''

लोकमानस में स्थित पूर्वकल्पना या पूर्वधारणा, पदार्थों कें आत्मशीलता, टोना-टोटका, विचारणा और अनुष्ठानिक विचारधारा की प्रधानता रहती है। उपर्युक्त लोकगीत में सभी प्रकार के लोकतत्वों का संगम मिलता है। इस गीत में लेखक कहता है कि ''सूर्य मानव शरीरधारी दिन के राजा हैं। उनकी माँ ने दूध को गरम कर उनके पीने के लिए रख दिया है। उन्हें बाहर से आने में देर हो गई और गरम दूध सेरा गया। माँ पूछती है कि आने सारी रात कहा बीता दी? उसी पर सूर्य उत्तर देते हैं कि हे! माता मैं नदी किनारे से गुजर रहा था तो एक बाँझ औरत ने मुझे रास्ते में रोक लिया। उसकी गोद भरने में सारी रात्रि बीत गई। फिर उसकी चाची ठंढे दूध के बारे में याद दिलाती है तो सूर्य कहता है कि चाची, नदी किनारे से आ रहा था तो मेरे एक निर्धन सेवक ने रास्ता रोक लिया तो उसे धन प्रदान करने में सारी रात बीत गई।''

उपर्युक्त कथनों में लोकमानस से समस्त विशेषताएँ विद्यमान हैं। यहाँ यथार्थ और कल्पना का समनवय बहुत ही स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जहाँ सूर्य मानव शरीर धारी के रूप में चित्रित किये गए हैं और मानव के द्वारा किये जाने वाले कर्मों का निर्धारण करते है। यहाँ पूर्ण आत्मशीलता, टोने-टोटके के प्रयोग के माध्यम से पुत्र दान करना और चाची द्वारा संज्ञान लेने पर धन प्रदान करने के उपरांत सारी रात्रि का बीत जाना जैसे कर्मों का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार के अनुष्ठानिक गीत में याचिका पुत्र, आरोग्य और सम्पन्नता जैसे मनोकांक्षाओं रखती है।

भारतीय संस्कृति में उपलब्ध सोलह (16) संस्कारों में विवाह संस्कार लोकमानस के जीवन का एक बहुमूल्य हिस्सा माना जाता है। विवाह में विघ्नता से बचने और निर्विघ्नता से समस्त कार्यक्रम सम्पन्न होने के लिए विविध प्रकार के लोकगीतों का गायन करती हैं। विवाह के समय कूप, नदी, वह वृक्ष, हर-पालो, मिट्टी आदि की पूजा की जाती है और सभी से आशीष मांगा जाता है जिसमें भिन्न प्रकार के गीतों का गायन किया जाता है। मगही लोकगीतों में विवाह के समय दुल्हा और दुल्हन को अपशगुन, टोना-टोटका आदि के बचाने के लिए वहाँ की महिलाएँ नाना प्रकार के गीतों के माध्यम से अपने इष्ट देव या कुलदेवता से आग्रह करती हैं कि इन नव विवाहित जोड़े की जीवन में आने वाली विघ्नता को निस्तार दे एवं सुख समृद्धि प्रदान करें। विवाह के समय दुल्हा और दुल्हन की माता का आम्र वृक्ष से आग्रह करते हुए देखा जा सकता है- ''हाथे सेनुरवा खोइछा पाकल पान, चलनन बहुआरों देई अम्मा मनावन''- अर्थात् दुल्हा या दुल्हन की माता हाथ में सिन्दूर लगाकर उस पर खोइछा के साथ पके हुए पान का पत्ता लिए उस आम्र वृक्ष से आग्रह करती है की हे आम्र वृक्ष मेरे बेटे या बेटी ने आम का पल्लों स्वयं के लिए नहीं श्री हरी की आराधना करने के लिए तोड़ा था, अतः आपसे आग्रह है कि इसे क्षमा प्रदान करे। उपर्युक्त पंक्तियों से हम समझ सकते है कि आम्र वृक्ष और मानव के मध्य कितना सुलभ व्यवहार का परिचय मिलता है।

विवाह के अंतर्गत वृक्ष ही नहीं कुआँ, आँधी-पानी, मिट्टी इन सभी से मान मनोवल किया जाता है। मृत्तिका खनन के समय मिट्टी के विवाह के गीत गाये जाते हैं।

''कहवाँ में मटिया लिहले जलमिया, कहवाँ में मटिया तोहरो विआह

कुरखेत मटिया लिहले जलमिया, मड़वा में मटिया तोहरों विआह।।''

भारतीय संस्कृति में विवाह एक ऐसा संस्कार है जिसमें लोकमानस और प्राकृति, लोकमानस और टोना-टोटका आदि का समन्वय प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। विवाह के समय यह दृश्य विचारने युक्त रहता है कि किस प्रकार बारात गमन के समय दुल्हे की माता, चाची, फूआ आदि दुल्हे का राई, मिरचाई आदि को एक मिट्टी के ढकनी में जला कर उसे बिना देखे लात मारने को कहती है और फिर ढकनी को अपने पैरों से (दुल्हे का पाव) एक ही चोट में में फोड़ देने को कहती हैं। यहाँ उपस्थित सभी स्त्रियों की एक ही मान्यता रहती है कि हमारे बच्चे को किसी की बुरी नजर न लगे। वहाँ उपस्थिति सभी स्त्रियाँ यह कहतीं हैं कि ''देखिहँ रे कोई नजरी न लगाये, सम्हारिहँ ऽ रे कोई नजरी न लगावे।''। और इतना ही नहीं दुल्हे-दुल्हन का दाम्पत्य सदा स्थिर रहे और कभी वर-वधु में अलगाव उत्पन्न न हो इसके लिए माँ सीरीष-वृक्ष के नजदीक जोग करने जाती है-

''जोगवा बेसाहन चलली मोरी अम्मा ओही रे सीरीसिया के गाछ,

अइसन जोग बेसइहँ ऽ मोरी अम्मा दुल्हा न छोड़ी दुलहिनिया के साथ,''

उपर्युक्त पंक्ति में वधु की माता सीरीस वृक्ष के नीचे जोग-जाप कर यह मनोकामना प्रकट करती है कि हे! सीरीस ऐसा जोग करना कि दुल्हा कभी दुल्हन का साथ न छोड़े। भारत की भूमि पर जिस प्रकार आधुनिकरण का प्रभाव यहाँ के शहरों में पाया जाता है, ठीक उसी प्रकार पिछले सैकड़ों सालों से जोग'जाप, टोना-टोटका, तंत्र-मंत्र पर विश्वास हमारे ग्रामीण परिवेश में भी देखने को मिलता है और भिन्न-भिन्न अनुष्ठानों में भी आदिकाल से ही लोकगीतों को माध्यम बनाकर इसका प्रयोग होता रहा है। आज के आधुनिक जीवन में भी हमें यह पर्याप्त रूप में देखने को मिलता है कि माँ के गर्भ से मृत्यु के शैय्या तक के सफर में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र आदि का पता हम पारंपरिक लोकगीतों में पा सकते हैं, जिसमें आदिम मानवीय प्रवृतियों का परिचय मिलता है, जो हमारे पुरातन सभ्यताओं, संस्कृति एवं सामाजिक संरचनाओं की जानकारी प्रदान करता है।

भारत वर्ष में लोकगीत का चलन केवल अनुष्ठान या सोलह संस्कारों में ही नहीं, बल्कि कृषि कर्म, वर्षागमन, खेल-खेलावन आदि में भी इनका प्रयोग अनिवार्य रूप से होता रहा है। बिहार के मगध क्षेत्र में अपने आराध्य से क्षमायाचना एवं आशीर्वाद की मनोकांक्षा के लिए लोकगीतों का गायन प्रचलित रूप से देखने को मिलती है। मगध प्रांत के साथ-साथ भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्रों में भी आकाल एवं सूखा पड़ जाने पर घर की सबसे बरिष्ठ स्त्रियों द्वारा रात्री के समय इंद्र देव से वर्षा देवी को धरती पर उतरने के लिए याचना करती है, जिसे मेघ गीत के रूप में भी जाना जाता है। इन गीतों में आकाल पड़ जाने से हो रही समस्याओं का करुणा पूर्वक वर्णन किया जाता है और वर्षा देवी से आग्रह किया जाता है कि-

''आहर सूख गेलई, पोखर सूख गेलई, सुख गेलई भ्इयाजी के खेत''

भइया जी के खेतवा में पपरी परीये गेलई, अब इन्दर होव ऽ न सहाय।

इस प्रकार के लोकगीतों में मानवीय आस्था इतनी प्रबल होती है कि लोकमानस न दिखने वाले अपने इष्ट की अराधना करते हैं और मनवांछित फल पाने के उपरांत उन्हें धन्यवाद ज्ञापन भी करते हैं। लोकमानस अपने विकट परिस्थितियों से मुक्ति पाने के लिए टोना-टोटका जोग-जाप, तंत्र मंत्र आदि का सहारा लेता रहा है। जिसकी अभिव्यक्ति वह लोकगीत के माध्य से वह करता है। सर्वविदित है कि आज भी भारत के ग्रामीण प्रवेशों में चेचक की बीमारी होने पर यह कहा जाता है कि माताजी हो गई है, और देवी माता को गीतों के माध्यम से इस पीड़ी से छुटकारा पाने के लिए आग्रह करती है।

हमारे भारत वर्ष में वृक्षों को माध्यम बनाकर भी अपने सभी ईष्ट देवी-देवताओं की आराधना की जाती है। लगभग पूरे भारत में हिन्दुओं की यह मान्यता रही है कि पीपल वृक्ष में समस्त देवी देवताओं का निवास रहता है। अतः उसे क्षती पहुंचाना साक्षात् ईश्वर को छती पहुँचाने के समान माना जाता है और शायद इसलिए इस वृक्ष को काटना या जलाना वर्जित है। ठीक उसी प्रकार नीम वृक्ष को देवी माता के निवास स्थान या यूं कहे सहचरी के रूप में जाना जाता है जिस पर देवी माता अपने सातों बहनों के साथ क्रीड़ा करती हुई झूला झूलती हैं। आम के पल्लों को पवित्रता का प्रतीक माना जाता है जिसे हर पूजा या कर्मकाण्ड में उपयोग किया जाता है। पंचतंत्रीय कथात्मक प्रणाली में भिन्न-भिन्न प्रकार के वृक्षों की विशेषता का वर्णन देखने को मिलता है। भारतीय सनातन संस्कृति में पंचमहावृक्षों की चर्चा सर्वविदित है जिसमें वर (वट वृक्ष), पाकड़, आम, पीपर, गुलर का नाम आता है। मगही लोकगीतों में इन वृक्षों का वर्णन विशेष रूप से पूजा एवं अनुष्ठान को सम्पन्न कराने के लिए किया जाता है। सनातन कर्मकाण्ड और पूजा में यह तो सर्वविदित है कि शमी वृक्ष की लकड़ी के बिना कोई यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता और और शायद इसी लिए इसे यज्ञ अरणी के नाम से भी जाना जाता है।

किसी देश अथवा राज्य की संस्कृति से ही वहाँ के निवासियों को पहचान मिलती है। इसलिए वहाँ के लोकमानस को विमुख करना आसान नहीं है क्योंकि उनकी नींव वहाँ के ऐतिहासिक परम्परा से उनकी पहचान बनी रहती है। लोक गीतों में अभिव्यक्त लोकप्रवृत्तियाँ आदि संस्कार होते हुए भी वर्तमान में पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण को रोकने में अत्यंत सहायक जान पडता है। भारतीय संस्कृति में लोक आस्थाओं की अभिव्यक्ति मूलतः लोकगीत के माध्यम से की जाती है। लोकगीतों का गायन पूजा एवं अनुष्ठानों के लिए तो किया ही जाता है, साथ ही मनोरंजन के लिए भी यह एक प्रचलित माध्यम है। ऐसे मनोरंजनपरक लोकगीतों में लोकमानसीय लोकप्रवृत्तियों का समावेश रहता है और शायद इसलिए कहा भी जाता है कि जिस लोकगीत में लोकप्रवृत्तियों का समावेश न हो, उसे लोकगीत नहीं कहा जा सकता।

इन लोकगीतों के अन्तर्गत संगीत, कलागीत या शास्त्रीय संगीत को रखा जा सकता है। मनोरंजनात्मक गीतों की कोटि में दो तरह के लोकगीत गाये जाते हैं। प्रथमतः खाली समय में मनोरंजन के लिए और समय काटने के लिए गाया जाता है। दूसरा व्यवसायिक गायकों के द्वारा रुचि परिवर्तन के लिए गाया जाता है। खाली समय में गाया जाने वाला लोकगीत मुख्यतः मगध प्रांत के स्त्रियों के द्वारा गया जाता है। साथ ही पुरुष भी इस लोकगीत को गाने में पिछे नहीं हैं। कभी विरहा, तो कभी फाग, तो कभी चैतार के रूप में गायन के लिए एक जगह एकत्रित हो जाते है। और सब मील कर गान-बजान किया करते है। इन लोकगीत में मुख्यतः भजन-कीर्तन या मनोरंजनपरक गीत का समावेश रहता है। पुरुर्व वर्ग इन लोकगीतों में लोकप्रवृत्ति की मात्रा प्राचूरता से पाई जाती है। फाग गीत जो मुख्यतः फागुन मास में गाया जाता है उसका एक उदाहरण हम इस प्रकार देख सकते हैं-

''सदा आनंद रहे इहे द्वारे, मोहन खेले होली हो,

एकवर खेले किशन कन्हईया, दोबर राधा प्यारी हो।''

मगध प्रांत में मुख्यतः स्त्रियों के द्वारा मनोरंजन के लिए भादो मास में गाये जाने वाली लोकगीतों में समाहित लोकप्रवृतियाँ होती है जो रात्रि के समय चैहट लोकगीतों के रूप में गाया करती हैं। किशोरियों द्वारा आषाढ़ और सावन मास में झूला झूलते हुए कजरी और पूर्वी गीत गाया करती हैं। इन सभी प्रकार के मनोरंजन गीतों में लोकप्रवृतियाँ अपने विविध रूपों में अभिव्यक्ति पाते है। भादों की वर्षा विहीन शून्य रात्रि में ग्राम्य स्त्रियों का समूह गली के चैराहे पर एकत्रित होकर दो समुदायों में बटकर अभिनयात्मक गीत गाती है। मगध के मगही चैहट गीतों में लोकप्रिवृतियों और लोकजीवन के सम्बन्धों की अभिव्यंजना होती है। दौल, बेटी, रैमल, सती परीक्षा, चम्पिया आदि चैहटों में वैयक्ति, पारिवारिक और सामाजिक संबंधों तथा रीति-रिवाजों का लोकतात्विक वर्णन मिलता है।

मगही लोकगीतों में विवाह के समय विविध परम्पराओं को सम्पन्न कराते समय मनोरंजनपरक गीतों का गायन किया जाता है। इन मनोरंजन परक गीतों में गाली, नोक झोक और स्त्रियों के मध्य थोड़े सुहाग भाग वाले अश्लील गीतों के गायन की परंपरा आदिकाल से ही चली आ रही है। परम्पराओं का निर्वहन करते समय ननद-भौजाई, देवर-भौजाई, ननद-गोतनी, देवरानी-जेठानी, सास-पुतोह, भभू-भौंसूर के मध्य के नोक-झोंक वाली गीतों का गायन किया जाता है। मगध क्षेत्र में बेटी, जिसका विवाह हो चुका है उसे सवासिन के रूप में जाना जाता है और इन लोक गीतों में सवासिन बेटियों और भौजाई के मध्य नोक-झोक वाली गीतों के बिना विवाह अनुष्ठान पूर्ण नहीं हो पाता है क्योंकि लावा भुनजाई की रीत सवासिनों के द्वारा ही पूर्ण किया जाता है। इन लोकगीतों में मनोरंजन के साथ-साथ स्नेहपूर्ण सौहद्र प्रवलता से विद्यमान रहता है। नोक-झोक वाले लोकगीतों का संबंध स्पष्ट रूप से हास-परिहास से रहता है। इसके मूल में मनोरंजन का ही स्थान विद्यमान रहता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Umashankar Bhattacharya: Magahi proverb, 1919
Jai Nath Pati and Mahavir Singh: Magahi idiom solving, 1928
Dr. Vishwanath Prasad: Magahi sanskar geet, 1965
Dr. Ram Prasad: Magadh's folk tales: study, 1996
Sampatti Aryan: Magahi folk literature, 1965
Dr. Ram Prasad Singh: Collection of Magahi folk songs, 1998
Inamul Haq: Literary study of Magahi folk tales, 2006,
Dr. Shrikant Shastri and Dr. Ramanand Krit: Magahi Folk Songs and Sensharan
Mathura Prasad Singh and Rameshwar Mahato Kriti: Magahi Bal Geet
Vishwanath Prasad Written: Magahi Sanskar Geet
Sant Ram Nagina Singh Krit: Magahiya Geet
Appan Geet Composed by Shri Nandan Shastri
Ramdas Arya Krit: Geet Man Ke
Dr. Ram Prasad Sharma: Folk tales of Magadha: Anushilan and Sanchay
Dr. Ram Prasad Sharma: History of Magahi Literature
Dr. Vasudevanandan Prasad: Modern Hindi Grammar and Composition, 23rd Edition 1993.